बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिन .....

बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिन, बिगड़ी कौन सुधारे रे ।
बणी-बणी का सब कोई साथी, बिगड़ी का कोई नाहीं रे ।
भरी सभा में लज्जा राखी, दीनानाथ गुंसाई रे । बिगड़ी.....
एक समय हरिशचन्द्र की सुधरी, सुवर्ण छत्र फिराई रे ।
देखत-देखत उनकी बिगड़ी, मशाणे में चीर फड़ाई रे ।
हाटों बीच बिकाई रे । बिगड़ी.....
एक समय रावण की सुधरी, सोने री लंका पाई रे ।
देखत-देखत उनकी बिगड़ी, बैरी हो गया भाई रे ।
सब परिवार मराई रे । बिगड़ी.....
एक समय गोपियन की सुधरी, तो बिच कुँवर कन्हाई रे ।
देखत-देखत उनकी बिगड़ी, छोड़ चले यदुराई रे ।
द्वारिका जाय बसाई रे । बिगड़ी.....
एक समय पाण्डव की सुधरी, झूठी पातल उठवाई रे ।
देखत-देखत उनकी बिगड़ी, गोपियन काबा लुटवाई रे ।
लाज नहीं बच पाई रे । बिगड़ी.....
नेम धरम की नाव बनाई, समंदर बीच तिराई रे ।
धरमी-धरमी पार उतरिया, पापी नाव डुबाई रे ।
कड़बी बेल री कड़वी तुम्बड़ियाँ, सब तीरथ कर आई रे ।
घाट-घाट को जल भर लाई, अजहुँ न गई कड़वाई रे ।
पाँचतत्व की चुंदड़ी अमोलक, चुंदड़ी रे दाग लगाई रे ।
नाथ जलंधर गुरू हमारा, गोरखनाथ जस गाई रे ।